

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -22 अंक - 17 दिसम्बर -I-2020 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

सपनों का संसार...हो रहा साकार

भारत सहित हर देश और उनके धर्मग्रन्थों में ये वर्णित है कि पूर्व में ये विश्व जन्त था...स्वर्ग था...पैराडाइज़ था। पर जिस प्रकार दिवस चक्र, साप्ताहिक चक्र, ऋतु चक्र होता, उसी प्रकार सृष्टि का भी एक चक्र है जो निरंतर घूमता रहता। हम आज इस चक्र के उस दौर से गुज़र रहे जहाँ सुबह की शुरुआत ही है भय, अनिश्चितता, अहम-वहम, मेरा-तेरा, अपना-पराया के साथ। ऐसे में हर किसी की चाहना... कि काश! ऐसी दुनिया हो, जहाँ ये सारी चीज़ें न हों... !

बहुत से सपने देखे हैं हम सबने, और रोज़ देखते भी रहते हैं। कुछ सपने दर्द देते या भयभीत कर जाते, पर कुछ ऐसे होते जो सचमुच हमारी जिन्दगी का सपना बन जाते... जिसे पाने की हम तमन्ना रखने लगते... लेकिन ये भी सोच चलती कि पता नहीं... मेरा सपना पूरा होगा भी या नहीं, काश... मेरा ये सपना सच हो जाये! ऐसे एक नहीं... बहुत से सपने हैं हमारे..., हम सब के। जैसे, मुझे मेरे सपनों का घर मिले, मेरे सपनों का परिवार मिले, सपनों का राजकुमार मिले या राजकुमारी, सपनों जैसी मेरी खूबसूरती, मेरा स्वास्थ्य मुझे मिल जाये... हैं ना ये आपके भी सपने! देखा जाता है, कभी किसी का कोई एक सपना पूरा हो भी जाता... लेकिन हर सपने पूरे हो जायें, इसकी तो आज के परिदृश्य में शायद कल्पना ही की जा सकती है... !

वो सब होगा...जो चाहोगे

एक वेरी-वेरी-वेरी गुड न्यूज़ है आपके लिए। जानते हैं क्या...? चलिए...आपको बता ही देते हैं। जी हाँ दोस्तों... आपके सारे सपने सच होंगे... कोई सपना बाकी न रहेगा... न केवल आपके सपनों का परिवार या राजकुमार होगा, बल्कि आपके सपनों का ही संसार होगा...वही अब साकार होगा। है ना ये वेरी-वेरी तो क्या कहें... बल्कि सबसे बड़ी खुशखबरी!

सब श्रेष्ठ... सुखदायी होगा...

इस संसार में सिर्फ़ खुशियाँ होंगी... चारो ओर सुख-शांति का माहौल होगा... सब धन-धान्य से भरपूर होंगे... सबके पास उत्तम स्वास्थ्य होगा... सबका एक सच्चा साथी होगा जिसपर आप पूरा भरोसा कर सकेंगे... सभी में एक-दूसरे के प्रति सच्चा प्रेम, सच्चा स्नेह होगा। छल, धोखा, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा जैसे विकार क्या होते हैं, इसकी वहाँ अविद्या होगी। आँखों में वासना नहीं, केवल श्रेष्ठ भावना होगी। सभी दिव्य... चमकते सूर्य के समान नज़र आयेंगे। हर सम्बंध सुखदायी होंगे... क्योंकि सब संतुष्ट होंगे। असंतुष्टता ही दुःख की जन्मदाता है। ज़रा सोच के देखिये... क्या दुनिया होगी वो!

क्या सचमुच संभव है...ऐसी दुनिया!

आप कहीं ये तो नहीं सोच रहे कि हमारा एक सपना तो पूरा होता नहीं, ये सपनों का संसार कहाँ से पूरा होगा! ठीक ही सोचना है आपका... कहाँ संभव लगता है ये! ऐसा कुछ संसार में दिखता तो नहीं! सबकुछ तो गलत ही नज़र आ रहा है! चारो ओर अतृप्ति, दर्द, विकार, वासनाओं का ही तो राज है! कहीं सच्चे प्रेम का बीज भी नज़र नहीं आता कि जिसे बोककर एक दिन हम प्रेम की प्राप्ति कर सकें!



निर्णायक युद्ध की घड़ी है ये...

दोस्तों, सही है आपकी हर बात! पर लगता है कि आपने संसार तो देखा...पर पूरा नहीं...अधूरा-अधूरा...। क्योंकि यदि आप पूरा संसार देख लेते, जान लेते, महसूस कर लेते तो आप ऐसा कभी न कहते। जानते हैं क्यों? क्योंकि इस संसार में आज महाभारत का वही एपिसोड चल रहा है जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में परमात्मा अर्जुन को ये सत्य ज्ञान दे रहे हैं कि अभी इस भीषण महाभारत युद्ध के पश्चात् एक सुंदर राज्य स्थापित होने वाला है जिसके निमित्त तुम्हें बनना है। इसलिए हे अर्जुन! उठो, और युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। क्योंकि ये निर्णायक युद्ध है, इसमें सबको न्याय मिल जायेगा, और इसका नेता तुम्हें बनना है।

परमात्म अवतरण... महापरिवर्तन...!

आज ये सृष्टि कुरुक्षेत्र का मैदान बन चुकी है जिसमें ढेर सारे कौरव तैयार हैं अपने अहंकार का प्रदर्शन करने को। इस मैदान के एक भाग पर परमात्मा अवतरित हो चुके हैं हमें अर्जुन और पांडव बनाने को। और वो भाग, वो महान तीर्थ स्थान है आबू पर्वत। जहाँ से परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की, जिसकी शाखायें आज समस्त विश्व में हैं। इस विश्वविद्यालय के माध्यम से वो निराकार परमात्मा हमें बता रहे हैं... अब इस कलियुगी, विकारी, भ्रष्टाचारी दुनिया का महापरिवर्तन निकट है...अब सबके दुःख दूर होने

वाले हैं...। स्वर्णिम संसार इस धरा पर साकार होने वाला है। इसके लिए ही वे हमें तैयार कर रहे हैं।

योगबल से ही मिलेगी विजय...

ये युद्ध हिंसक नहीं...अहिंसक है। क्योंकि हमें बाहुबल से नहीं...योगबल से ये युद्ध लड़ना है। हमें विकारी को नहीं, विकारों को खत्म करना है। घातक हथियार नहीं, ज्ञान की तलवार और योग की ढाल हाथ में उठानी है। अपने दिव्य गुणों और दिव्य शक्तियों से विकारी का परिवर्तन कर उसे महान बनाना है। परमात्मा कहते, तुम नफरत से, हिंसा से एक मनुष्य को भी नहीं जीत सकते... फिर विश्व क्या जीतोगे! किंतु प्रेम से, गुणों से तुम विश्व तो क्या... मुझे भी जीत सकते हो! और आज इस विश्वविद्यालय में उस दृश्य को साक्षात् देखा जा सकता है। जहाँ परमात्मा अपनी श्रीमत् द्वारा मनमनाभव रहने का मंत्र दे रहे हैं। इस मंत्र में ही सर्वशक्तियाँ निहित हैं। परमात्मा कहते, सर्व देहधारियों की याद को भूल तुम अपना मन मुझ एक परमात्मा में लगाओ। मुझे मन से, प्यारे से याद करो। ऐसा करने से तुम्हारा मन, जो एक चंचल घोड़े के समान है, तुम्हारे नियंत्रण में आ जायेगा। फिर तुम उसे जिस तरह चलाना चाहोगे चला पाओगे। और यही इस महासंग्राम में तुम्हारी विजय का आधार है। क्योंकि मन के जीते जीत है...और मन के हारे हार है...।

ऐसे उदाहरण... हकीकत में...

ऐसे एक, दो या हजार नहीं बल्कि लाखों उदाहरण आप इस विश्वविद्यालय में देख सकते हैं... जिन्होंने अपने मन पर या तो जीत पा ली है या इसके पुरुषार्थ में काफी आगे निकल चुके हैं। इसी दुनिया में रहते, अपने हर सम्बंध, हर जिम्मेवारी निभाते हुए इन्होंने स्वयं को सच्चा तपस्वी बनाया है। ये योग करते नहीं, बल्कि इनका योगी जीवन ही बन गया है। जो आज संसार में सभी को बहुत मुश्किल लगता, असंभव लगता, वो इन योगियों के लिए अति सहज है। सबकुछ संभव है इन विभूतियों के लिए। तभी तो कहते हैं... जिसने अपने मन को जीत लिया, सही मायने में उसने ही जगत को जीत लिया है।

आओ... हम अर्जुन बन जायें...

तो हे प्रभु प्रिय आत्माओं, आओ... हम भी परमात्मा को अपना सारथी, अपना मार्गदर्शक बनायें... क्योंकि वो ही हैं जो सही मार्ग जानते हैं, और कोई नहीं... कोई भी नहीं...। जब हम साज-सज्जा वाली... चमक-दमक वाली... अहंकार से लैस विशाल चतुरंगिनी कौरव सेना को छोड़ एक परमात्मा को ही अपना सारथी बना लेंगे तो हम भी अर्जुन बन जायेंगे...वीर योद्धा बन जायेंगे और तब इस संसार में आपको कोई परास्त नहीं कर पायेगा... न माया और न प्रकृति। तब आप असल में विश्व विजेता होंगे और आने वाली स्वर्णिम दुनिया में आपका राजतिलक होगा।

निजानंद के लिए पाँच अपनायें, रखें और करें



- ब्र. कु. गंगाधर

कोई भी गुरु व संत अपने नाम के आगे 'आनंद' शब्द को जोड़ते हैं, जैसे कि निजानंद महाराज, परमत्यागी परमानंद जी, केशवातीर्थ केशवानंद जी आदि-आदि। ये आनंद एक ऐसा गुण है जिसकी सभी को चाहना रहती है। आनंद चाहिए तो सभी को, परंतु कहाँ से मिलेगा उसका कोई बिग बाजार तो है नहीं कि वहाँ से खरीद कर ले आवें! फिर भी हम आनंद की खोज जीवन भर करते रहते हैं।

आनंद प्राप्त करने के लिए विशेष रूप से पाँच नैतिक सदगुणों को अपने जीवन में अपनाने की, पाँच मानसिक प्रक्रियाओं को अंकुश में रखने की तथा पाँच आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ हर रोज़ करने की ज़रूरत है। ये बात निःसंशय है।

पाँच सदगुण जो कि आपके जीवन में आनंद को प्रचुरता से परिपूर्ण कर देंगे, वो हैं कृतज्ञता, सच्ची प्रशंसा, क्षमा, स्वीकृति और करुणा। लोगों के छोटे से छोटे उपकार के लिए उनका आभार मानें। उनके कार्य की सच्चे दिल से प्रशंसा करें। कृतज्ञता और प्रशंसा आपके जीवन में चमत्कारिक रूप में बदलाव ला देंगे। ये साधारण दिखने वाली वस्तुएं आपके जीवन में बाहुल्य और कृपा भर देंगे। सदा मीठा, मधुर व सत्य ही बोलें। 'क्षमा' क्रोध को मारने का एक परम-शस्त्र है। कोई आपको कष्ट दे तो उसे क्षमा कर दें। सच्चे होने के बावजूद भी दयालु होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। क्षमा, ये खुशी की महत्वपूर्ण चाबी है। जो पहले क्षमा करे वो सच में बड़ा बहादुर है। लोगों पर करुणा करें और आपकी क्षमता के अनुरूप उनकी मदद अवश्य करें। करुणा, प्रामाणिकता और अन्धों के प्रति आदर, ये मानवता के बहुत महत्वपूर्ण प्रमुख अंग हैं। किसी की भी टीका-टिप्पणी नहीं करें। जीवन-काल इतना छोटा है, लोगों को प्रेम करने का भी समय नहीं मिलता तो दूसरों की टीका-टिप्पणी करने के लिए कहाँ से मिलेगा! दूसरों के साथ अपनी तुलना न करें। प्रेम बाँटे और अपने पास जो भी वस्तु आदि है उससे प्रेम करें। दूसरी महत्वपूर्ण बात ये है कि, स्वीकार करें कि बहुत सारी वस्तुओं को आप बदल नहीं सकते। इसे अंतःकरण से स्वीकारें। स्वीकृति एक बहुत बड़ा गुण है।

पाँच मानसिक प्रक्रियाओं पर नियमन आपको आंतरिक शक्ति और सुख प्रदान करती है। और वो हैं, तृष्णा, विचार, इच्छाएं, अहं और वर्तन। परमानंद आपका निजानंद बना रहे, इसके लिए राग, द्वेष और तृष्णा से दूर रहें और विचारों को नियंत्रित एवं शुद्ध व श्रेष्ठ रखें। विचारों के द्वारा ही हम अपने ब्रह्माण्ड और भविष्य का निर्माण करते हैं। एक-एक विचार व संकल्प आपके शरीर के प्रत्येक कोष पर असर डालता है। इसलिए अपने विचारों पर काबू रखें।

इसके साथ-साथ अपनी इच्छाओं को कम करना बहुत ज़रूरी है। इच्छा एवं आसक्ति, दुःख का मूल कारण है। हमें अपना क्रोध, लोभ, ईर्ष्या जैसे विकारों को काबू में कर सकारात्मकता में परिवर्तित कर देना चाहिए। अपने वर्तन को सकारात्मक रखना भी अति आवश्यक है। सत्य तो यह है कि हमारे साथ जो घटनायें घटित होती हैं उसका प्रभाव हमारे पर सिर्फ दस प्रतिशत है। नब्बे प्रतिशत असर तो उस घटना के प्रति हमारी प्रतिक्रिया कैसी है, उस पर निर्भर है। विशेष रूप से हमें विनम्र होकर, अहंकार का त्याग करना चाहिए। अहंकार और क्रोध हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं। अहंकारी किसी के पास जाता नहीं है और क्रोधी के पास कोई आता नहीं है। अहंकार और क्रोध सम्बंधों और परिवार का नाश कर देते हैं। ये सब मानसिक प्रक्रियाएँ हमारे अपने स्वभाव को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसीलिए हम इन सभी मानसिक प्रक्रियाओं को जितना हो सके काबू में रखें।

हमने जाना कि परमानंद, परम शांति व सुख पाने के लिए हमें क्या-क्या अपनाना है और क्या-क्या छोड़ना है तथा क्या-क्या नियंत्रित करना है। हम सभी परमानंद को निजानंद बनाने के लिए यदि इन सिम्पल बातों को ध्यान में रखें तो कितना अच्छा हो! परम सुख और परमानंद का एड्रेस हमारे भीतर, हमारे पास ही मौजूद है। पर कभी हमने इसे जानने की चेष्टा ही नहीं की और ना ही हमारा ध्यान इस ओर गया। हम ढूँढ़ते रहे बाहर, सम्बंधों में, पैसों में, प्रकृति में, पूजा-अर्चना में। किन्तु अब, यदि हम सभी परमानंद के इच्छुक, छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दें जैसे कि दूसरों का आभार व्यक्त करना, प्रशंसा करना, अपने अहंकार का त्याग करना और अपने संकल्पों को नियंत्रित रखना, तो परमानंद ही हमारा निजानंद हो जायेगा। ठीक है ना! समझ में आ गया ना! उसे कैसे पाना है!

स्वयं को देख स्वयं को बदलें

आप सभी दिव्य गुणों के गुलदस्ते हो ना! दिव्यगुणों के गुलदस्ते से जीवन महक जाती है। तो आप सबकी जीवन सदा महकी हुई रहती है ना! एक बार बाबा ने कहा था और कोई दान आप नहीं कर सकते हो लेकिन गुणदान तो कर सकते हो। ब्राह्मणों को दान तो नहीं करेंगे। सहयोग देंगे।

किसी में 99 अवगुण हों लेकिन एक गुण, एक विशेषता ज़रूर सभी में होती है। कोई उस विशेषता को जानते हैं और कोई अपनी विशेषता को जानते हैं और कोई अपनी विशेषता को भी जानते नहीं हैं। बाबा ने आपको अपना बनाया है तो बाबा कहते हैं - तुम सब विशेष आत्मायें हो। तो कोई विशेषता देखी तब

जायेगी और सेवा में बहुत सफलता मिलेगी। मम्मा हमको कहती थीं कि आप में यह विशेषता है इसको सेवा में लगाओ तो यह दुगुनी, तीगुनी हो करके 100 प्रतिशत हो जायेगी, इसीलिए हमारी जीवन जो है वो श्रेष्ठ बनाना या साधारण बनाना अपने हाथ में है।

वर्तमान समय जो भी हो रहा है, जो भी सुनने-देखने को मिल रहा है, यह सब आपके पेपर हैं, बिना पेपर के कोई पास होता है? के.जी. वाले का भी पेपर होता है। वह भी पेपर के बिना आगे नहीं बढ़ सकते। तो हम 21 जन्म का राज्य-भाग्य लेंगे, आधाकल्प पूज्य बनेंगे, आधा कल्प राजा बनेंगे और बिना पेपर के! यह कैसे हो सकता है? ब्राह्मणों के



दादी हृदयमोहिनी मुख्य प्रशासिका

मम्मा हमको कहती थीं कि आप में यह विशेषता है इसको सेवा में लगाओ तो यह दुगुनी, तीगुनी हो करके 100 प्रतिशत हो जायेगी, इसीलिए हमारी जीवन जो है वो श्रेष्ठ बनाना या साधारण बनाना अपने हाथ में है।

तो आपको अपना बनाया। नहीं तो दुनिया में कितनी कुमारियाँ हैं, पढ़ी-लिखी हुई बहुत जज, वकील हैं। बाबा को आप ही पसन्द आई तब तो आप बाबा की बनी ना! आपने बाबा को तो पहचाना। चलो कोई विशेषता आप में नहीं हो, यह विशेषता तो है कि भगवान को पहचान लिया। तो यह तो कितनी बड़ी विशेषता है आप सबमें, है कि नहीं है? तो हरेक में कोई न कोई विशेषता होती ज़रूर है लेकिन विशेषता को कार्य में लगाना और उसको बढ़ाना है। अभी जो उस विशेषता को पहचानते ही नहीं हैं, तो वह बढ़ायेंगे क्या? और जितना आप विशेषता को कार्य में लगायेंगे, अभिमान से नहीं लेकिन सेवा भाव से तो आपकी विशेषता बहुत बढ़ती

संसार के हिसाब से अभी स्थापना का कार्य बहुत आगे बढ़ गया है। उसमें आप समझो पहले बहुत अच्छा था, अभी ऐसा क्यों हुआ, अरे पहले तो तुमको अंगुली पकड़ करके बाबा ने चलाया। छोटे बच्चों को माँ-बाप अंगुली पकड़कर चलाते हैं क्योंकि गिरे नहीं, चोट नहीं लगे। अभी वह जब बड़ा होगा तो भी माँ बाप अंगुली पकड़कर चलेंगे क्या? तो आप भी अब बड़ी हो गई हो। अभी पहले जैसे थोड़े ही बाबा आपको अंगुली से पकड़ करके चलायेंगे। इसलिए आप यह सोचो कि वर्तमान समय हमको अपने को बदलना है, यह पक्का कर दो। संकल्प की स्याही से यहाँ मस्तक में लिख दो कि मुझे बदलना है।



दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

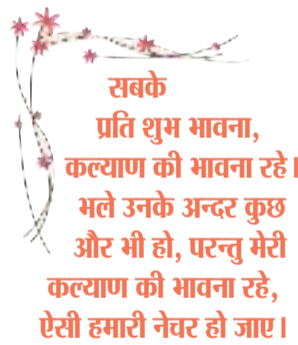
हमारे सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं। हम उस सच्चे माशूक के आशिक हैं, हम सभी उस सच्चे माशूक के इश्क को जानते हैं। एक बाबा की लगन कितनी प्यारी, मीठी, सुखदाई है। ऐसी लगन में मगन रहने वाले कभी किसी दूसरे की लगन में नहीं

एक बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ना ही सच्चा समर्पण

जायेंगे। अगर किसी की आपस में बहुत-बहुत प्रीत होती है तो उसे तोड़ना मुश्किल होता है। ऐसे जब बाप से हमारी पूरी लगन है, प्रीत है तो यह भी गुप्त खुशी व नशा रहता है कि हमने तो उसी बाप को पाया है। सारी दुनिया कुछ भी नहीं है, एक तू इतना प्यारा है। हम उसी प्यार के समुद्र की नदियाँ हैं। इसी को ही हम कहते हैं निरन्तर योग में रहना, यह मस्ती बड़ी निराली है। बाबा के प्यार का अनुभव करते उसी मस्ती में रहो तो दूसरी कोई भी बात सामने आ नहीं सकती। यह पुरुषार्थ की बहुत सहज विधि है।

बाबा कहते तुम सब हो कठपुतलियाँ और तुम कठपुतलियों को मैंने दी है श्रीमत की चाबी। तो बाबा ने जो श्रीमत की चाबी दी है उसी अनुसार बेफिकर बादशाह बन निश्चिंत हो खेल करो। लेकिन सदा समझो हम राजर्षि, राजयोगी हैं। अपना ऑक्जूपेशन नहीं भूलो। योगी के लिए मूल चाहिए, ज्ञान से पुरानी दुनिया का वैराग्य। हम हैं योगी लोग, न कोई अपना न कोई पराया। हमें कौन जानें। यह बहुत मस्ती थी। इसलिए कहती - हे आत्मा तू बाबा को स्वाहा हो जाओ, तो मन-बुद्धि भी सब स्वाहा हो जायेगा। जब सब स्वाहा हो गया तो पुरानी दुनिया से वैराग्य हो ही जायेगा। पुरानी दुनिया तब तक खींचती है जब तक समर्पण नहीं हुए हैं। संकल्प शक्ति भी समर्पण है तो दूसरी कोई भी बात नहीं आ सकती। इसी का नाम तपस्या। तो पहले अपने आप का त्याग करो अर्थात् समर्पण हो जाओ। जब आत्मा स्वयं समर्पण हो गई फिर तपस्या करना, अशरीरी बनना बहुत सहज है। अब हमारी तपस्या की, दुनिया को भी दरकार (ज़रूरत) है। तत्वों को भी इसकी दरकार है। हम सब देख रहे हैं दुनिया की हालत दिन-प्रतिदिन गम्भीर होती जाती है, यह दुनिया की गम्भीर बातें हमें और भी प्रेरणा देती हैं कि हमें तपस्या करके विश्व को अपनी साइलेन्स की किरणें देनी हैं।

सेंसिटिव नेचर छोड़ो, इनोसेन्ट बनो



सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना रहे। भले उनके अन्दर कुछ और भी हो, परन्तु मेरी कल्याण की भावना रहे, ऐसी हमारी नेचर हो जाए।

सेंसिटिव नेचर दो प्रकार की है, एक पॉज़िटिव रूप में लेवे तो बहुत जल्दी आगे बढ़ सकते हैं। दूसरा सेंसिटिव नेचर कई बार बहुत दुःख देती है, सेंसिटिव नेचर वाले जल्दी उतावले हो जायेंगे। किसी के भाव को भी नहीं समझेंगे। उनमें धीरज नहीं रहता। समझने की कोशिश भी नहीं करते, इससे बहुत नुकसान हो जाता है। अभी उसे परिवर्तन करना है। किसी भी बात में सिद्ध करने की कोई ज़रूरत नहीं है। ज्ञानी-योगी तू आत्मा का वास्तव में चिन्ह यह है कि जो सेकण्ड में

वायब्रेशन से भी डिस्टैच कर लेवे, इशारे से कैच कर लेवे। जैसे वायरलेस कैच कर लेता है, अजब लगता है आवाज़ अन्दर घुस जाता है। ऐसे ही जितना हम साइलेन्स में जाते हैं, बुद्धि महीन होती जाती है, जो और कोई वायब्रेशन अन्दर घुस नहीं सकते। कोई की कैसी भी भावना हो, वह अन्दर टच नहीं कर सकती। इसके लिए बुद्धि इतनी स्वच्छ, साफ, क्लीन हो जो हर बात कैच कर सकें। दिन-प्रतिदिन समय ऐसा आ रहा है, बाबा के दिल में जो हमारे प्रति हो, वो सेकण्ड में कैच कर लेवें।

दूसरा - एक-दो की भावनाओं को भी कैच कर लेवें। सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना रहे। भले उनके अन्दर कुछ और भी हो, परन्तु मेरी कल्याण की भावना रहे, ऐसी हमारी नेचर हो जाए।

तीसरा - सेवा में आत्माओं को जो चाहिए वो फट से मिलता जाए। जो चीज साइंस से निकलती है वो

चीज सिर्फ उनके लिए थोड़े ही है, वो सबके लिए यूज हो जाती है। ऐसे हमारे सारे ब्राह्मण परिवार में हो जाए तो बड़ा अच्छा हो जायेगा। कोई भी बात में किसी भी घड़ी, किसी के साथ भी यह ख्याल नहीं होता है कि कहीं या न कहीं? पता नहीं क्या रियेक्शन होगा...तो यह जो ख्याल होता है ना, यह भी तो एक प्रकार का साधारण व व्यर्थ ख्याल है। इससे भी फ्री हो जायें तो ख्याल श्रेष्ठ और कामलायक होंगे। इसमें एक तो याद में रहो, दूसरा सर्विस में आपस में सहयोग हो, उससे बाहर वाले लोग भी मानेंगे, यह गैरन्टी है।

हिम्मत, सत्यता और विश्वास तीनों एक जैसे हों। हिम्मत है लेकिन सत्यता की थोड़ी कमी है। हिम्मत और सत्यता है तो आत्म विश्वास या बाबा में विश्वास नहीं है। लेकिन जब तीनों एकदम पॉवर में हो जाते हैं, तो यह लाइफ अच्छी लगती है। चलो अपने में विश्वास नहीं है, तो बाबा करेगा



दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका

यह तो विश्वास का आवाज़ हो! तो तीनों इकट्ठे होने से सब सहज हो जाता है, कोई बड़ी बात नहीं है। हुआ ही पड़ा है। तो यह एक हमारा अन्दर सोचने का तरीका जैसा होगा, हमारे बोल जैसे होंगे, उसमें सत्यता और विश्वास काम करेगा। आजकल बहुत सोचने की आवश्यकता नहीं है, रखो भगवान पर, करने वाला बैठा है। अन्दर से सभी सेंसिटिव नेचर को छोड़के इस तरह से बनो। तो क्वोक पुरुषार्थ करके सफलता को पाओ और दूसरों को भी सफलता देने में मदद करो। तो सदा सफलता देख कहेंगे कि यह मेरा भाग्य है। पुरुषार्थ करके भाग्यवान बने तो ज़रूर सफलता मिलेगी। ऐसे नहीं जो भाग्य में होगा...नहीं। तो सोचने के तरीके को बड़ा अच्छा रॉयल, सुन्दर बनाना है।

हमारी मंशा अवश्य पूरी होगी... बशर्ते...

☉ कहते हैं, उड़ान मंजिल को नज़दीक ला देती है। चलने, दौड़ने में मेहनत लगेगी। उड़ान हमें थकायेगी भी नहीं और समय की बचत भी होगी, और तो और जल्दी ही अपनी मंजिल भी पा लेंगे। लेकिन हाँ, फिर उड़ान भी शक्तिशाली होनी चाहिए। उसमें कोई रुकावट या बाधा न हो। उसमें कोई दुविधा न हो।



अब यहाँ सोचने का विषय यह है कि सबसे अच्छी, सबसे शक्तिशाली और प्रभावी उड़ान कौन-सी है? और किसकी है? पंखियों की उड़ान बहुत तेज़ है, तुरंत उड़कर आकाश को छू लेते हैं। एरोप्लेन भी बहुत तीव्र वेग से उड़ता है और बहुत अल्प समय में मंजिल पर पहुंच जाता है। लेकिन क्या ये उड़ान शक्तिशाली और अवरोध मुक्त हैं? एक पंखी आकाश छू तो लेता है, पर ज्यादा देर तक उड़ता नहीं रह सकता। उसके उड़ने की शक्ति की भी एक सीमा है। बीच-बीच में उसे

थोड़ा सहारा भी चाहिए, नहीं तो थक जाएगा बिचारा।

अब आप कहेंगे कि एरोप्लेन तो नहीं थकता ना! हाँ एरोप्लेन नहीं थकता, पर तब तक, जब तक कि उसमें पेट्रोल की ताकत है। पेट्रोल के बिना उड़ना तो दूर, वो ज़मीन पर रंग भी नहीं सकता। और उसकी राह में बाधाएँ भी तो आ सकती हैं, कभी उड़ते-उड़ते इंजन बंद हो जाता, कभी लैंडिंग के समय पहिये नहीं खुलते और कभी तो वो अपनी दिशा से ही भटक जाता। और फिर क्या होता, ये तो हम सभी जानते ही हैं...!

फिर ऐसी शक्तिशाली, बाधा मुक्त उड़ान कौन-सी है जो सिम्पल भी हो, टाइम सेवर भी हो और डेस्टिनेशन पर सेफली पहुंचा भी दे?

उड़ान की एक ही शर्त...

क्या आप ऐसी उड़ान की कल्पना कर सकते हैं जिसमें ये सारी विशेषताएँ, ये सारे गुण हों! आप कर रहे हैं कल्पना! हमें लगता है कि आप ज़रूर कल्पना करके देख रहे होंगे कि ऐसी उड़ान कौन-सी हो सकती है! आपने देखा..... आप कितनी तेज़ रफ्तार से उड़ गये कल्पना की उड़ान! टाइम लगा? कोई रुकावट आयी? नहीं ना! आपने जैसे ही कुछ देखा, सुना या पढ़ा... आप उड़ चले कल्पना की उड़ान। और जानते हैं आप इस उड़ान से अपनी मंजिल, अपने डेस्टिनेशन पर अवश्य पहुंचेंगे, लेकिन... अपनी उड़ान में जान आपको खुद डालनी होगी, उसे शक्तिशाली आपको खुद बनाना होगा। बस यही एक शर्त है इसकी।

सब है...कल्पना का स्वरूप

आपने भले कभी सोचा न हो या ध्यान न दिया हो, जानते हों या न जानते हों, लेकिन इस दुनिया की हर छोटी से बड़ी चीज़ की नींव 'कल्पना' ही है। आज हमारे सामने जो भी है, हम जिस भी चीज़ का इस्तेमाल कर रहे हैं वो सब किसी न किसी की कल्पना का ही परिणाम है।

आज दुनिया में हम इतनी ऊँची-ऊँची इमारतें या बड़े-बड़े महल देखते हैं लेकिन कभी जंगलों या गुफाओं में रहने वाले मनुष्यों ने इनकी कल्पना ही तो की होगी।

आज घर बैठे टीवी पर हम चैनल्स बदल-

बदल कर प्रोग्राम देखते रहते हैं, लेकिन कभी किसी ने इसकी कल्पना ही तो की होगी कि दुनिया में कहीं और की चीज़ या लोगों को हम एक जगह बैठे देख सकें। दूर के लोगों से किसी समय पर भी बात कर पाने की कल्पना ने ही तो फोन को जन्म दिया। तेज़ी से सूचनाएं एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने की कल्पना ने आज इंटरनेट की खोज कर डाली।

कल्पना में हो जान...

कल्पना एक ऐसा विचार है जिसका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं होता। फिर भी मानवीय व्यवहार को इस तरह प्रभावित करती है मानो कि उसका अस्तित्व बना हुआ है। आज तक जितने भी आविष्कार हुए, वे सब किसी की कल्पना ही थे। ऐसा नहीं है कि हम कल्पना नहीं करते, लेकिन उन लोगों ने अपनी कल्पना में जान डाल दी थी, उसकी प्राण प्रतिष्ठा कर दी थी। हम कल्पनाएँ तो करते हैं, लेकिन उनमें जान डालना भूल जाते हैं। इसलिए बड़े कारनामे नहीं कर पाते। केवल वे लोग विश्व में बड़े-बड़े काम करते हैं, जिनकी कल्पना शक्ति बहुत प्रगतिशील होती है। वे कल्पना में अपनी इच्छापूर्ति का चित्र खींच लेते हैं और इसे स्वप्न बना लेते हैं।

हकीकत होगी आपकी कल्पना

आप या हम भी जिस काम को करने या होने की इच्छा रखते हैं, उस लक्ष्य को ही अपनी दुनिया बना लें। उसी में जियें, उसी में खायें, उसी में जीवन का आनंद लें। आपका सपना ही आपका सबकुछ हो। आपका सारा फोकस आपके लक्ष्य पर हो। हमें अपने लक्ष्य का अपने मस्तिष्क में काल्पनिक चित्र बना लेना चाहिए एवं काम की अवधि में इस पूर्ण चित्र को हरदम अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए। फिर कोई ताकत ऐसी नहीं होगी जो आपके लक्ष्य को पाने में रुकावट बनेगी या बाधा बनेगी। इसी तरह यदि आप, हम सभी मिलकर एक शुभ आश रखते हुए एक ऐसी स्वर्गिक सृष्टि की कल्पना करें जहाँ सब सुखी, शांतिपूर्ण, स्वस्थ और सम्पन्न हों, जहाँ सभी में एकता हो, सब एक हों तो आप देखेंगे, ये एक वास्तविक शक्ति की तरह काम करेगा और एक दिन हम सभी की ये शुभ मंशा अवश्य पूरी होगी।



सिकन्दराबाद-वेस्ट मोडपल्ली। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्रह्माकुमारीज के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय,शांतिवन, ब्र.कु. मंजू,ज्ञान सरोवर, ब्र.कु. शिविका,शांतिवन, ब्र.कु. सविता,वारंगल तथा अन्य। कार्यक्रम में शरीक हुए तेलंगाना स्टेट ट्रान्सपोर्ट मिनिस्टर पी. अजय कुमार, अंजनयनेलु,पूर्व विधायक एवं चेयरमैन,दिव्य शक्ति ग्रुप, कौंडल राव,चेयरमैन,लैम्को ग्रुप ऑफ कम्पनीज तथा बी.पार्थसारथी रेड्डी,चेयरमैन,हेटेगे ड्रग्स कंपनी।



लंदन-यू.के। दीपावली के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए यूरोप स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी। साथ हैं ब्र.कु. जेमिनी। कार्यक्रम में शरीक हुए लंदन के मेयर सादिक खान।



छतरपुर-म.प्र। दीपावली के अवसर पर विधायक आलोक चतुर्वेदी को ईश्वरीय सौगात एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा।



मोकामा-बिहार। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए थाना दरोगा लाल बहादुर पासवान, ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. विपिन तथा अन्य।



हैदराबाद-तेलंगाना। पार्क हयात में सोफिया युनिवर्सिटी,हैदराबाद(ज़ाबिबा) द्वारा आयोजित कॉन्वोकेशन सेरेमनी में ब्र.कु. मोनिका,राजयोग प्रशिक्षिका एवं मोटिवेशनल स्पीकर,छोटा उदपुर,गुजरात को 'डॉक्टर ऑफ सोशल सर्विस-ऑनररी डॉक्टरेट' की डिग्री प्रदान करते हुए डॉ. जी. सत्यनारायण नायडू,चांसलर,सोफिया युनिवर्सिटी, श्रीमति सुधा नायडू,डायरेक्टर,सोफिया युनिवर्सिटी, डॉ. एस.वेणुगोपाल आचार्य,एडवाइजर टू सी.एम. तेलंगाना स्टेट एंड फॉर्मर यूनिवर्सिटी मिनिस्टर,भारत सरकार, पी. विनय कुमार,प्रेसीडेंट,आई.आर.डी.ए. तथा अन्य गणमान्य लोग।



धमतरी-छ.ग.। दीपावली के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता तथा अन्य।



पानीपत-हरियाणा। ज्ञान मान सरोवर के तपस्याधाम में 108 दिन की योग तपस्या भट्टरी का उद्घाटन पानीपत सर्कल के सेवाकेन्द्र व उपसेवाकेन्द्र की टीचर्स बहनें, राजयोगिनी सरला दीदी,क्षेत्रीय निर्देशिका, ब्र.कु. भारतभूषण,नेशनल कॉर्डिनेटर,ब्रह्माकुमारीज वैज्ञानिक एंड अभियंता विंग की उपस्थिति में किया गया।



मुन्द्रा-कच्छ(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा अदाणी विल्मर प्लॉट में आयोजित 'तनाव मुक्त जीवन' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुशीला बहन। मंचासीन हैं ब्र.कु. विनोद तथा ब्र.कु. विजय।

संकल्प शक्ति



ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हम दिनभर में कार्यव्यवहार में आते सुबह से शाम तक न जाने कितने, कैसे-कैसे संकल्प हम करते रहते हैं। जिन पर हमारा कोई कंट्रोल नहीं होता। हम एक के बाद एक संकल्प करते ही जाते। जिस तरह से हर चीज की एक लिमिट होती है चाहे वो कंप्यूटर है, बैंक है, चाहे कोई भी मशीन है हर एक की एक लिमिट होती है। उसी तरह से इस मन रूपी मशीन में भी संकल्प प्रोडक्शन की एक लिमिट है। किस तरह का मटेरियल हमें इसमें डालना है और कितना डालना है वो हमें ध्यान देना है।

संकल्प भी हैं हमारे डॉक्टर

गतांक से आगे... पिछले अंक में बताया गया था कि जब हम अपनी सोच से अपनी समस्या को बढ़ा सकते हैं तो अपनी सोच से ही उसे कम भी तो कर सकते हैं। लेकिन हम इस पावर को यूज करें ना फिर।

संकल्प से सिद्धि एक लॉ है, जो संकल्प हम करते हैं वो वायब्रेट होता है और वो होता जाता है। हम चाहते हैं कि ये ठीक हो जाए तो हम कौन-सी थॉट क्रियेट करेंगे? ठीक हो जाये... ये भी नहीं क्रियेट करना है, क्योंकि इसकी भी एनर्जी है। ठीक हो जाए मतलब अभी ठीक नहीं है। जो दिख रहा है वो नहीं सोचना है। वो सोचना है जो देखना चाहते हैं।

जैसे मान लो आप ऑफिस से थोड़ा थके हुए शाम को घर पहुंचते हो और घर पहुंचते ही कहते हो कि मैं बहुत ज्यादा थका हुआ हूँ, ये सोचते जाओ और बोलते जाओ। फिर कोई पूछेगा घर पे कि थके हुए हो, तो कहेंगे हाँ, बहुत थका हुआ हूँ। फिर सब बच्चों को भी बोलेंगे कि उनको डिस्टर्ब नहीं करना, वो बहुत थके हुए हैं। फिर किसी का फोन आएगा, बाहर वॉक पे चलना है,

नहीं जी आज वो बहुत थके हुए हैं। तो जो थकावट थोड़ी थी वो बढ़ेगी या नहीं बढ़ेगी? अब इस थकावट को कम करने के लिए क्या बोलना पड़ेगा? सच्चाई को नकार तो बिल्कुल नहीं सकते, सोच तो क्रियेट करनी पड़ेगी। लेकिन कौन-सी थॉट क्रियेट



करनी है वो च्वाइस हमारी है। तो हम आये घर, ऑफिस से, शरीर थोड़ा-सा थका हुआ है, ये सच है। लेकिन वो उसी समय की सच्चाई है। एक घंटे के बाद की स्थिति क्या बनानी है ये हमारी च्वाइस है।

जब हम ऑफिस से घर आये कोई पूछे कि कैसे हो तो हमें सही शब्द यूज करना है। कहना है, हम फ्रेश हैं, बिल्कुल फ्रेश हैं,

मौज में हैं, एनर्जेटिक हैं। और ये सिर्फ औरों को नहीं बोलना, ये हमें अपने आप को भी बोलना है। और सिर्फ मुख से नहीं, मन से बोलना है। आप सिर्फ एक दिन ये प्रयोग करके देखिएगा। आप सिर्फ बोलते जाओ, सब परफेक्ट है, सब परफेक्ट है, परफेक्ट है, मैं बिल्कुल परफेक्ट हूँ। हमारे संकल्प हमारे शरीर तक पहुंच रहे हैं। और जो थकान पचास पर थी वो धीरे-धीरे चालीस पर आयेगी या नहीं आयेगी! हमारा भाग्य हमारे हाथ में है। हमारा हर कर्म मन(आत्मा) से हो रहा है। हम तो सोच क्रियेट कर रहे हैं कि हम परफेक्ट हैं, परफेक्ट हैं, लेकिन आसपास के लोग बोलते हैं कि थके हुए हैं, थके हुए हैं, तो उनको भी स्टॉप करना है। धीरे-धीरे हमारे सारे नेगेटिव वायब्रेशन्स के शब्द बदलते जायेंगे। दुआ वो नहीं होती है जो कोई कभी-कभी आकर देता है, दुआ मतलब हमारी हर थॉट दुआ। हमारा हर थॉट, हर शब्द दुआ बन जाये तो हमारा जीवन ही दुआओं से भरपूर हो जाएगा खुद के लिए भी और सभी के लिए भी।



बेतिया-बिहार। बिहार की प्रथम महिला उप-मुख्यमंत्री रेनु देवी जी को गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजना।



पटियाला-अर्जुन नगर। 'हाउ टू मेक बेस्ट फ्रॉम वेस्ट' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में ज्योति अरोड़ा, सी.ई.ओ., वात्सा सोल्यूशन, ब्र.कु. राखी तथा अन्य।



नरसिंहपुर-म.प्र.। दीपावली के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम तथा वरिष्ठ ब्र.कु. भाई।



बहल-हरियाणा। दीपावली एवं बाल दिवस के अवसर पर बच्चों के लिए आयोजित पेंटिंग कॉम्पिटिशन के पश्चात् प्रतिभागी बच्चों के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला तथा अन्य भाई-बहनें।



रतलाम-नज़रबाग कॉलोनी(म.प्र.)। दीपावली के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा तथा अन्य भाई-बहनें।



झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। सेठ किशनलाल वाले मंदिर में गीतांजलि हॉस्पिटल चरखी दादरी द्वारा आयोजित निःशुल्क नेत्र चिकित्सा जाँच शिविर में सम्बोधित करने के पश्चात् डॉ. ओम प्रकाश, हवा सिंह, दीपक शर्मा, नरेन्द्र, सविता आदि टीम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. वसुधा तथा ब्र.कु. नीलम।

कथा सरिता



एक शहर में एक नूह नामक बूढ़ा व्यक्ति रहता था। उसका सम्बन्ध राजघराने से था फिर भी वह साधारण प्रजा की तरह रहता था। उसके भाई ही सारा राजकार्य सम्भालते थे। नूह बहुत धार्मिक और दान पुण्य करने वाला था जबकि उसके भाई ऐशप्रस्त थे और प्रजा पर अत्याचार करके धन इकट्ठा करते थे।

एक दिन की बात है, सूरज निकलने से पहले जब नूह के घर में सभी सो रहे थे। नूह को आकाशवाणी हुई कि यह दुनिया अब जल्दी ही भारी बारिश से जल-मग्न होने वाली है। इसलिए तुमको दो काम करने हैं, एक तो सब को बताना है विनाश के बारे में, दूसरा एक बेड़ा तैयार करना है जिसमें सभी जानवरों, पंछियों, और पेड़-पौधों का एक-एक जोड़ा और उनके लिए छह मास का अनाज और पानी उसमें भरना है। साथ में जो लोग इस बात को मानेंगे, उन्हें साथ ले करके उनके लिए भी पर्याप्त सामग्री भरनी है।

जब नूह ने यह सभी नगर वासियों को बताया तो कुछ लोग ही माने और जो माने वह नूह का साथ देने के लिए तन, मन और धन से लग गए। एक ऐसा बेड़ा तैयार किया और दुनिया भर से सभी जानवर, पंछी और पौधों की किस्में मंगवा कर उसमें भरना शुरू कर दिया। दूसरी तरफ उनके भाइयों ने घमंड में आकर आसमान को छूने वाली इमारतें बनाई और कहा कि जब बारिश होगी हम बच जायेंगे क्योंकि पानी इतना नहीं भर सकता जितनी ऊंची इमारतें हैं।

आखिर में प्रलय का दिन आ गया, बारिश शुरू हुई और देखते ही देखते इतना तूफान शुरू हो गया कि सभी इमारतें ताश के पत्तों की तरह पानी में बह गईं। उधर नूह का बेड़ा पानी में तैरने लगा। लगभग छह मास तक बारिश होती रही। फिर एक दिन बारिश समाप्त हुई। सूरज दिखाई देने लगा। नूह ने बेड़े की छत पर जा करके देखा तो दूर एक छोटा-सा ज़मीन का टुकड़ा दिखाई दिया। पानी से चारों ओर घिरा हुआ ज़मीन का टुकड़ा और उसमें फल और पानी की भरपूरता थी। नूह अपने साथियों के साथ वहीं रहने लग गया। वहाँ हर तरह के ऐश्वर्य एवं सुख सबके लिए थे।

आध्यात्मिक भाव : यह कहानी कलियुग के अंत व सतयुग के आदि के संगमयुग का चित्रण है। जैसे नूह को आकाशवाणी हुई, उसी प्रकार परमात्मा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा(सृष्टि के रचयिता) को भी साक्षात्कार हुआ सुख-शांति वाली सृष्टि के निर्माण और दुःखों की दुनिया के अंत का। जैसे नूह की बात कुछ ही लोगों ने मानी, ठीक उसी प्रकार परमात्मा की बात को भी कुछ ही लोग समझ पाए। बाकी तो साइंस के घमण्ड में चाँद पर प्लॉट बनाने के नशे में चूर हैं। नूह को जो ज़मीन समुंदर में मिली थी वह स्वर्ग है। अभी जो इस ईश्वरीय कार्य में मददगार बने, वे ही इस सुख के हकदार बनते हैं और वे ही इस विषय सागर से पार, नई दुनिया में जाते हैं।



मिली... सुख
की दुनिया



डॉ. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

मर्ताक से आगे...

जैसा कि पिछले अंक में कहा गया था कि जिस तरह आज शारीरिक रूप से अगर देखा जाए कि व्यक्ति जब बाहर जाता है और थोड़ा-सा मौसम बदल जाता है तो उसके शरीर पर उसका प्रभाव आ जाता है। सर्दी, जुकाम, बुखार हो जाता है। डॉक्टर के पास जायेंगे और डॉक्टर से पूछेंगे कि ये सब मुझे क्यों हुआ तो डॉक्टर शायद यही कह देगा कि वायरल है और कुछ नहीं। ठीक हो जाओगे।

ये एंटीबायोटिक ले लो, ये मल्टी विटामिन ले लो। लेकिन कभी हमने ये सोचा कि आज जीवन के अंदर थोड़ी-बहुत जो परीक्षाएँ आती हैं, परिस्थितियाँ आती हैं, समस्याएँ

आध्यात्मिकता की आवश्यकता क्यों...!!

आती हैं और जहाँ व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ता है, तो संघर्ष करते-करते जब टेंशन में आ जाता है, डिप्रेसन में आ जाता है तो वो टेंशन या डिप्रेसन में क्यों आ जाता है? एक छोटा-सा बच्चा जब स्कूल

टेंशन हो रही है। सोचने की बात है कि एक बच्चा, एक पेपर, एक एग्जाम नहीं दे पा रहा है। उसमें वो टेंशन में आ जाता है, नर्वस हो जाता है, जो पढ़ा हुआ है सब भूल जाता है, ऐसा क्यों होता है? जिस तरह से

शिकार हो जाते हैं। ठीक इसी तरह जब जीवन के अंदर प्रैक्टिकल परीक्षाएँ आती हैं, और जब हम भी आध्यात्मिक रूप से सशक्त नहीं होते हैं, या दूसरे शब्द में कहें तो जब हमारी स्पीरिचुअल इम्युनिटी लो हो जाती है, आध्यात्मिक प्रतिरोधक शक्ति क्षीण हो जाती है, तब छोटी-छोटी बातों में हम रियेक्ट करने लगते हैं, छोटी-छोटी बातों में गुस्सा आ जाता है, चिड़चिड़ापन आ जाता है, उदास हो जाते हैं, नर्वस हो जाते हैं। किसी ने कुछ कह दिया तो मूड ऑफ हो जाता है, किसी ने कुछ कह दिया तो सहन नहीं होता है, इतना गुस्सा कर लेते हैं, बाद में सारी करना पड़ता है। ये क्यों हो रहा है? क्योंकि हमारी स्पीरिचुअल इम्युनिटी बहुत लो हो गई है। अब उसको वापिस बढ़ाने के लिए कोई मल्टी-विटामिन नहीं है जो हमें भीतर से सशक्त करे, आध्यात्मिकता ही हमें भीतर से सशक्त कर सकती है।

- क्रमशः

आज मनुष्य अपना समय वहीं इनवेस्ट करना चाहता है, जहाँ से जीवन में उसको कुछ प्राप्ति हो, कुछ उपलब्धियाँ हों। और इसीलिए वो समझता है कि आध्यात्मिकता हमारे लिए नहीं है। जो बुजुर्ग हो गए, उनके लिए ही ये आध्यात्मिकता है। वास्तव में अगर देखा जाए तो आध्यात्मिकता बुजुर्गों के लिए नहीं है, बल्कि वर्तमान समय में हर इंसान के लिए बहुत आवश्यक है।



जाता है, और दूसरे दिन जब उसका एग्जाम होता है तो वो भी माता-पिता से कहता है कि कल एग्जाम है, मुझे

फिजिकल इम्युनिटी जब लो हो जाती है, तो बाहर के वायरस अटैक करते हैं, और हम वायरल फीवर के

यह जीवन है

मत बन बड़ा आदमी, छोटेपन का मजा अनूठा होता है, समंदर में मिलने से पहले तक ही हर नदी का पानी मीठा होता है। जिस कार्य को करने से ईश्वर प्रसन्न हो, वह कार्य किसी पूजा से कम नहीं। दो तथ्य हमारे व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं - एक हमारा धैर्य, जब हमारे पास कुछ न हो, दूसरा हमारा व्यवहार जब हमारे पास सबकुछ हो।



संतरे में हैं अनेक स्वास्थ्यवर्धक गुण

कब्ज दूर होती है। स्नायु रोगों (सांस सम्बन्धित) से पीड़ित एवं तनाव ग्रस्त रोगियों के लिए संतरा लाभदायक है।

» **कब्ज** - रोजाना खाना खाने के बाद और सोने से पहले संतरा खाने से पेट में कब्ज नहीं बनती है।

» **चेचक के दाग** - संतरे के छिलकों को सुखा कर पीस लें। 4 चम्मच गुलाब जल को मिलाकर, लेप बनाकर रोजाना चेहरे पर मलने से चेचक के दाग हल्के हो जाते हैं।

» **खून की कमी** - संतरे का रस रोजाना सेवन करने से खून की कमी, पायरिया, आंखों की जलन, त्वचा के रोग, हाथ-पैर की जलन आदि रोगों में बहुत लाभ मिलता है।

» **पायरिया** - संतरे के रस को गाय के दूध के साथ सेवन करने से पायरिया रोग, पाचन शक्ति कमजोर होना, कमजोरी, नींद न आना, पुरानी खांसी, आंखों के रोग, उल्टी, पथरी, जिगर के



रोगों में बहुत ही लाभ होता है। संतरे में दिल के रोग, वात विकार और पेट के रोगों को दूर करने की अद्भुत क्षमता है।

» **गुर्दे के रोग** - सुबह नाश्ते से पहले 1-2 संतरे खाकर ऊपर से गर्म पानी पीने से या संतरे का रस पीने से गुर्दे के रोग अच्छे हो जाते हैं। संतरा गुर्दे को स्वस्थ रखने में लाभदायक है।

» **जुकाम में दे आराम** - 1 संतरे के छोटे-छोटे टुकड़े करके 1 गिलास पानी में डालकर उबाल लें। उबलने पर जब पानी आधा बाकी रह जाये तो इसे छानकर सुबह शाम पीने से जुकाम में आराम आता है।

» **शिशु शक्तिवर्धक**

बच्चों को संतरे का रस पिलाने से बच्चे कुछ ही

दिनों में मोटे-ताजे हो जाते हैं तथा उनका पोषण तेजी से होता है। हड्डियों की कमजोरी और टेढ़ापन दूर होकर हड्डियाँ मजबूत हो जाती हैं। डिब्बे या गाय का दूध पीने वाले बच्चों को संतरे का रस रोजाना पिलाना ज़रूरी है। इसके रस को पीने से सूखा रोग (रिकेट्स) ग्रस्त बच्चे मोटे ताजे हो जाते हैं। इसका रस आंतों की गति को तेज करता है।

» **शराब छुड़ाना** - सुबह नाश्ते से पहले संतरे के रस का सेवन करने से शराब पीने की इच्छा कम होती है।

» **टायाफाइड** - संतरा गर्मी, बुखार और अशांति को दूर करता है। रोगी को दूध में संतरे का रस मिलाकर पिलायें या दूध पिलाकर संतरा खिलायें। दिन में कई बार संतरे का सेवन कराना चाहिए। इससे गर्मी कम होती है और मल-मूत्र खुल कर आता है।

» **परिणामशूल** - पेट में ज़ख्म, फोड़े, नासूर आदि हो तो रोजाना संतरे का सेवन लाभदायक होता है।

» **छाती के रोग** - हृदय, टी.बी., सांस और छाती के हर रोगों में संतरे का सेवन बहुत ही लाभदायक होता है।

» **संतरा खाने के नुकसान** - अधिक मात्रा में संतरा खाने से पेट में ऐंठन और दस्त जैसी समस्या उत्पन्न हो सकती है।

ओम शान्ति मीडिया वर्ग फहेली - 01(2020-2021)

1	2	3	4	5		
		6		7		
8	9		10	11		
	12		13		14	
15			16	17		18
		19				20
21	22			23	24	
		26		27		28
						29
30				31		

ऊपर से नीचे

1. पुत्र, बेटा (3)
2. पीड़ा, दुःख (4)
3. कपटी, दुष्ट, चंट (3)
4. पैर, पांव, कदम (3)
5. करतब दिखाने वाला, एक जाति (2)
9. टीस, खटक, पुराना द्वेष (3)
11. इन्द्र का शस्त्र (2)
13. जायका, स्वाद, असर (3)
14. डॉटना, दुल्कार, प्रताड़ना (4)
15. नादान, मूर्ख (4)
17. स्कंध, स्तम्भ, वृक्ष का धड़ (2)
22. किनारा, तीर (2)
24. प्रस्थान, गमन (2)
26. ढकना, आवरण करना (3)
27. नियम, कानून (3)
28. लगी... बस एक यही, धुन (3)

बाएं से दाएं

- ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

1. आदि देवी देवता धर्म (4)
3. कटुवचन, बुरे बोल (4)
6. कमर, शरीर का मध्य भाग (2)
7. बार-बार कटना, दुहराना (3)
8. बनावटी, कृत्रिम (3)
10. नमक, नून (3)
12. कामयाबी, संकल्पपूर्ति (4)
14. कुर्बान, समर्पण (2)
15. नाशिका, इज्जत (2)
16. ठण्डी, शरद (2)
18. राह, रास्ता (2)
19. बुलाना, आवाज देना (4)
20. कर्ण, श्रवणन्द्रिय (2)
21. विचार, राय, सलाह (2)
23. हाट, क्रय-विक्रय स्थल (3)
25. तुरन्त, अतिशीघ्र (2)
26. छाल, कवच, ऊपरी आवरण (3)
29. नस, नाड़ी, लगाव (2)
30. रुकना, धमना (4)
31. गुलामी, परतंत्रता, दासत्व (3)

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारी, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क - भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्रॉपर (पेबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।



» नये साल में कुछ नया कैसे करें !

अभी का जो समय चल रहा है जिसमें मार्च से लेकर दिसम्बर तक जो सफर रहा है सभी का, इस सफर में सभी ने कहीं न कहीं, किसी न किसी बात में सफर किया। कईयों ने बहुत एन्जॉय किया और कईयों ने ऐसे समय में अपने आपको बहुत अच्छी तरह से निखारा। कईयों को स्वयं को चेक करने का मौका मिला। लेकिन कहीं-कहीं बोर भी हुए। अब आने वाला समय 2021 है जिसमें हम सभी उन बातों को आज शायद याद न करना चाहें जो इस साल में हुई। लेकिन जो हमारी प्रोग्रेस है, जिसने अपने ऊपर काम करके अपने को निखारा है, उन लोगों के लिए तो कोई भी साल नया साल ही होता है। अब बात ये है कि हर साल ऐसे ही हम बहुत सारे संकल्प लेते हैं और उन संकल्पों को पूरा करने के लिए हम अपने आपको तैयार भी करते हैं। लेकिन उन संकल्पों का असर कुछ दिन के बाद खत्म हो जाता है। कारण उसके पीछे क्या है कि जो चीज हमें हर समय याद रहे उसके लिए पुरुषार्थ पूरे साल का होता है न कि एक दिन का। लेकिन उस संकल्प पर दृढ़ रहने के लिए, उस संकल्प से जितनी भी बातें जुड़ी हुई हों उसको करना बहुत जरूरी है। जैसे एक उदाहरण लें कि मुझे अपने आपको पूरी तरह से पॉवरफुल बनाना है, शक्तिशाली बनाना है। उसकी चार-पाँच कैटेगिरी बना लीजिए। चार-पाँच कैटेगिरी माना उसके चार-पाँच एरिया

हैं, स्पीरिचुअली स्ट्रॉन्ग बनाना है, फिजिकली स्ट्रॉन्ग बनाना है, मेंटली स्ट्रॉन्ग बनाना है। ऐसे ही इमोशनली स्ट्रॉन्ग बनाना है। ऐसे ही चार-पाँच आस्पेक्ट्स लाइफ के आपने लिख लिया। तो पहले संकल्प को एक्सप्लेन करना बहुत जरूरी है, उसको परिभाषित

और चार दिन उस पर काम करना बंद कर देते हैं। तो कारण ये है कि हमको उसका एक्सप्लेनेशन चाहिए। उससे फायदा क्या होगा और उससे उन्नति कितनी होगी। तो पहले से ही उस दृश्य को, उस विज़न को, उस विज़न को हमने अपने अन्दर डाल लिया तो वो बार-बार मुझे फोर्स करेगा, बार-बार ये कहेगा कि ये काम करो।

चार दिन बाद, पाँच दिन बाद वो संकल्प खत्म हो जाता है। इसीलिए बहुत लोग न्यू ईयर रेजोलूशन मनाते हैं और चार दिन उस पर काम करना बंद कर देते हैं। तो कारण ये है कि हमको उसका एक्सप्लेनेशन चाहिए। उससे फायदा क्या होगा और उससे उन्नति कितनी होगी। तो पहले से ही उस दृश्य को, उस विज़न को हमने अपने अन्दर डाल लिया तो वो बार-बार मुझे फोर्स करेगा, बार-बार ये कहेगा कि ये काम करो।

करना बहुत जरूरी है। जैसे ही आपने उसको परिभाषित किया, जैसे ही आपने अपने आपको उसके साथ जोड़कर रखा, परिभाषित किया तो क्या होगा कि वो चीज आपके जहन में हमेशा रहेगी। लेकिन सिर्फ संकल्प लेना और उसको पूरी तरह से एक्सप्लेन करके अपने अन्दर नहीं डालना तो ये जो चीज है ये हमको आगे बढ़ने से रोकती है। चार दिन बाद, पाँच दिन बाद वो संकल्प खत्म हो जाता है। इसीलिए बहुत लोग न्यू ईयर रेजोलूशन मनाते हैं

जिससे हमारी प्रोग्रेस निश्चित रूप से होनी ही है। तो इस तरह से हम अपने आपको तैयार करके अपने आपको आगे बढ़ा सकते हैं। नैचुरल रूप से ये फॉर्मूला बहुत काम करता है। एक्सप्लेनेशन जो चीज मुझको करनी है और क्यों करनी है उसको अगर हमने क्लियर कर दिया अपने माइंड के अन्दर, तो वो आपको हमेशा याद दिलाती रहेगी कि आपने इस समय ये संकल्प किया था। और कई बार ये भी है कि जब हम नये साल में जाते हैं तो जनवरी एक-दो

मास हम ब हु त अ च छी तरह से बिताते हैं और फिर और-और बातों में अ प न ए आपको इन्वॉल्व कर लेते हैं। लेकिन आने वाला समय और भी कृशियल हो सकता है, आने वाला समय और भी उन बातों को भी लेके आ सकता है जिसके बारे में आपने सोचा नहीं है और उसकी पूर्व तैयारी यही है कि हम अपने आपको स्पीरिचुअली स्ट्रॉन्ग बनायें। जितना भी हो सके अपने मन को उन सारे अटैचमेंट्स से अपने आपको बाहर निकालें, नहीं तो इन सारे मोह के धागे, या अटैचमेंट्स जिनसे हमारी एफिशिएंसी लो हो गई, यही हमको बहुत तकलीफ देंगे। तो जितना हम अपने आपको स्पीरिचुअली स्ट्रॉन्ग बनायेंगे, बनाते चले जायेंगे उतना आने वाला समय चाहे कैसा भी हो, चाहे अच्छा हो, चाहे बुरा हो। जैसा भी हो उसमें हम अपने आपको पॉवरफुल बनाके आगे बढ़ा सकते हैं, शक्तिशाली बना सकते हैं। तो आने वाला वर्ष आपको नयी खुशियाँ दे, नयी जीवन दे, नये तरीके से जीवन जीना सिखाए और आप वो सबकुछ पाएँ जो इस वर्ष में अधूरा रह गया हो, और वो वर्ष आपके लिए नवयुग की तरह ही लाइट हाउस बनकर आपको राह दिखाये। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ बहुत-बहुत मुबारक।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

जीवन दर्शन



कई बार बच्चे मम्मा से पूछते थे, "मम्मा आप क्या सोच रही हैं, कहाँ हैं?" तब मम्मा बोलती थीं, "मैं यहाँ नहीं चल रही हूँ, मैं वैकुण्ठ की धरती पर चल रही हूँ।" कभी-कभी सबको सुनाती थीं कि मुझे महारानी श्रीलक्ष्मी के रूप में ये-ये अनुभव हुआ, महाराजकुमारी श्रीराधा के रूप में ये-

देवी स्वरूपा

ये अनुभव हुआ। अपने भविष्य और बाबा के महावाक्यों पर मम्मा का निश्चय शत प्रतिशत था। बाबा ने कहा, उन्होंने माना और वैसे चलकर दिखाया। मम्मा की हर बात शक्तिशाली होती थी - योग में, ज्ञान में, धारणा में और सेवा में। मम्मा में न किसी के प्रति आकर्षण हुआ और न किसी से नफरत की। मम्मा ने सबको अपना बनाया और वह सबकी बनकर रहीं। इस प्रकार मम्मा शक्ति थीं, माँ थीं और असाधारण सिद्धिस्वरूपा थीं।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें



प्रश्न : मेरा नाम राघव है, मैं मुरादाबाद से हूँ। मुझे अकेले ट्रेवल करने में डर लगता है। मैं इसके लिए क्या करूँ?
उत्तर : ये कुछ पूर्व जन्मों की घटनाओं का दुष्परिणाम होता है। जो मनुष्य के सबकॉन्शियस माइंड में समा जाती है। पूर्व जन्म में आपको कभी यात्रा में कष्ट हुआ है। एक्सीडेंट हुआ हो या किसी ने आपके साथ लूटपाट की हो, किसी ने आपके साथ मारपीट कर दी हो, और आप अकेले पड़ गये हो तो जब ऐसी कुछ घटनायें जब हो जाती हैं तो वो सबकॉन्शियस माइंड में चली जाती हैं। इसीलिए अकेलेपन में आपको डर लगता है। आप भगवान को अपना साथी बना लें। और दो अभ्यास करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सर्वशक्तिवान मेरे साथी हूँ। बस इसी स्मृति के साथ आप यात्रा शुरू करें और जब सीट पर बैठें तो इसे दुबाया दोहरायें। मेरे साथ स्वयं भगवान है, डरने की क्या बात है। गीत गाते रहें। थोड़े ही दिन में आपका ये भय समाप्त हो जायेगा।

प्रश्न : मेरा नाम आशीष है। मुझे मानसिक रूप से कई प्रकार की तकलीफें हैं, मैं कोई भी कार्य सही तरीके से नहीं कर पाता। कोई भी कार्य मैं में स्थिर नहीं हो पाता, इसलिए मैं बहुत चिंतित रहता हूँ। और मेरे परिवार वाले भी बहुत चिंतित रहते हैं। कृपया बतायें कि मैं अपनी मानसिक स्थिति को कैसे स्थिर रख सकता हूँ?

उत्तर : निःसन्देह ये समस्या बढ़ती ही जा रही है संसार में। दिन-प्रतिदिन ब्रेन की शक्ति बहुत ही कम होती जाती है। प्रेशर बढ़ता जाता है। तो मनुष्य को जानना चाहिए कि इस प्रेशर में ब्रेन की शक्तियाँ और क्षीण होती हैं। जितना मनुष्य लाइट होकर काम करेगा, जितना खुशी के साथ काम करेगा चाहे पढ़ाई हो या चाहे कोई काम हो। उतना ही उसका ब्रेन एनर्जेटिक रहेगा और उनको ज़्यादा लाभ होगा। आपको कुछ अभ्यास करने हैं। सवेरे उठकर आपको 108 बार लिखना है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। और रात को सोने से पहले मैं एक महान आत्मा हूँ इसको भी 108 बार लिखेंगे। इन दोनों संकल्पों से ब्रेन को एनर्जी मिलने लगती है। दूसरा अभ्यास आपको करना है कि मैं आत्मा स्वराज्यधिकारी हूँ। मन-बुद्धि की मालिक हूँ। ये राजयोग का बहुत अच्छा अभ्यास है। अपने को ये फीलिंग देनी है कि मन-बुद्धि मेरे कन्ट्रोल में है। और मन को कहना है कि तुम शांत रहो। तुम शक्तिशाली हो, तुम्हारे अन्दर बहुत शक्तियाँ

हैं, उन्हें जागृत करो। और बुद्धि को कहना है कि तुम स्थिर हो जाओ। अब मैं जो काम करूँ तुम इसमें ही लग जाना। या मैं जो सुनूँ, पढ़ूँ उसे याद कर लेना। दिन में पाँच बार ऐसा कर लें। कभी-कभी दो-दो घंटे में कर लेना है। इससे आपकी स्थिरता बहुत बढ़ जायेगी लेकिन आपको इसके साथ-साथ ये भी ध्यान रखना है कि कौन-सी चीज आपको अस्थिर कर रही है।

प्रश्न : मैं अपनी बात को किसी के सामने अच्छे से रख नहीं पाता। कभी-कभी बोलते समय कुछ वर्ड्स मिस हो जाते हैं। कृपया बतायें मैं अपनी बात को कैसे एक्सप्रेस करूँ? क्योंकि कई बार मैं जो कहना चाहता हूँ वो नहीं कह पाता, बाद में मुझे ख्याल आता है कि मुझे ऐसा-ऐसा कहना चाहिए था।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र. कु. सूर्य



उत्तर : आपके सबकॉन्शियस माइंड में कहीं न कहीं स्टिल फियर बसा हुआ है। वो कभी का भी हो सकता है, 40 साल पहले का भी, 50 साल पहले का भी। वो जो है जैसे ही आप कोई बात करने जाते हैं वो फियर एक्टिव हो जाता है और आपको रोकने लगता है। या तो आप हेज़िटेट करेंगे, या कुछ भूलेंगे। आपको उस फियर को समाप्त करना है। इसलिए रोज सवेरे उठते ही 21 बार याद करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं मुक्त हूँ, फियरलेस हूँ। बिल्कुल सच्चे मन से। तो पास्ट का सबकॉन्शियस माइंड में भरा हुआ भय डिलीट होता जायेगा। ये आपको 21 दिन तक, 21 बार रोज सवेरे करना है। और जब आपको किसी से बात करने जाना हो तो आपको उनसे क्या बात करनी है, वो लिख लें कागज़ पर। और जब मिलने जायें तो उनको एक बार पढ़ लें कि ये-ये कहना है। और जब आधा मिनट रह जाये तो तब सोचें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं निर्भय हूँ और मैं अपनी बात बिल्कुल सहजता से रख सकता हूँ। जब ऐसे

कॉन्फिडेंस के साथ जायेंगे तो दो-चार बार ऐसी प्रैक्टिस करते ही ये सब खुल जायेगा। और आप सफल हो जायेंगे।

प्रश्न : तीन वर्ष हो गये हैं मेरी शादी को। और मेरे पति से अलग रहते हुए मुझे दो वर्ष हो गये हैं। हमारा कोर्ट में एक केस है जो मेटर्नेस का है। वो और उनके पेटेंट्स डाइवोर्स चाहते हैं लेकिन मैं और मेरा परिवार ये नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि हम फिर से अपने ससुराल में जायें। मेरे पति और ससुर मुझसे अच्छा व्यवहार करें तो बात हमारी बिल्कुल सुलह पर आ जाये तो क्या योग का अभ्यास इसके लिए हो सकता है?

उत्तर : हाँ योग का अभ्यास भी हो सकता है और आपको उनसे बात भी करनी है लेकिन बात करने से पहले आप सात दिन एक अच्छा योगाभ्यास करें। एक घंटा रोज इस स्वमान से कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं विघ्न विनाशक हूँ। ये दो स्वमान याद करके एक घंटा योग करें। इसके बाद उन तीनों को आत्मा देखकर माइंड टू माइंड बात करेंगे। हम सब बहुत अच्छे फ्रेंड हैं। हमारा एक सुन्दर परिवार है। आओ हम सब मिलकर एक साथ रहें। इस जीवन की यात्रा को सुख में व्यतीत करें। ऐसे ये सब सात दिन करके सेम टाइम करेंगे रोज। अभ्यास भी और ये बातें भी। फिर उनसे बात करें। फिर रिज़ल्ट कुछ और होगा। परिवर्तन प्रारम्भ हो जायेगा। कुछ वो लोग झुकेंगे और कुछ आपको भी झुकना है। तो ये सब समस्यायें समाप्त हो जायेंगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'





- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

बदलते समय में हम भी बदल रहे...!!!

बदल रहा है सबकुछ। कल था... वो आज नहीं। आज है... वो कल नहीं होगा। पानी ठहर जाये, तो उसमें भी जर्म्स पैदा हो जाते हैं...
बहता पानी और ही शुद्ध होता जाता है। हमें भी बदलाव पसंद है। बदलने की कोशिश भी करते हैं। अच्छे-अच्छे संकल्प भी यथा-
समय करते हैं, पर क्या जो हमने चाहा वह होकर रहता है! अगर हमारी चाहत पूरी नहीं होती, तो उसके कारण पर कभी विचार
किया? या फिर संकल्प किया और फिर संकल्प किया...बस... बदलाव तो हुआ नहीं! समय बदल गया... कहीं हम वहीं के वहीं ठहरे
तो नहीं रह गये...!!!

हम हर वक्त बदल रहे हैं। लोग कहते हैं, हम परिवर्तन होना नहीं चाहते लेकिन हर घड़ी हम परिवर्तित हो रहे हैं क्योंकि हर घड़ी परिवर्तनशील है, क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। समय के अनुसार मनुष्य को स्वयं में परिवर्तन लाना बेहद जरूरी है। लेकिन देखा गया है कि बुराई की ओर अग्रसर होना तो इंसान के लिए सहज है, लेकिन स्वयं में कुछ श्रेष्ठ परिवर्तन लाने में लोगों को तकलीफ महसूस होती है। परिवर्तन होने का संकल्प भी कई मनुष्य लेते हैं, जैसे कोई त्योहार होगा, नये वर्ष का आरंभ होगा, कोई शुभ अवसर होगा तो कई सुंदर-सुंदर संकल्प लेते, प्रतिज्ञा करते कि आज से मैं ये नहीं करूंगा, अच्छे कार्य करूंगा, सभी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करूंगा, किसी को दुःख नहीं दूंगा। लेकिन वो शुभ अवसर गया, पुराने संस्कार धीरे-धीरे हावी होने शुरू हुए और विस्मृति हो गई अपने श्रेष्ठ संकल्प की। फिर लगता, मैं जैसा हूँ, वैसा ही ठीक। प्रेम से काम कहीं निकलता है! सिर्फ अच्छा ही करूंगा तो तरक्की कैसे होगी! और फिर जैसे के तैसे...! लेकिन...

शरीर छोड़ना है तो ऐसा कोई भी कर्म नहीं करेंगे जिससे पाप बन जाए। ऐसा नहीं समझो, कि मुझे पता चल जाए कि मैं उस दिन मरने वाला हूँ तो मैं अभी से कुछ भी गलत नहीं करूंगा या फिर अच्छे

हैं 'मोह' के कारण। अगर आप अपनी उन्नति चाहते हैं तो सबसे पहले 'मोह' पर जीत पाओ। मोह केवल व्यक्ति से नहीं है, लेकिन वस्तु से अथवा किसी वैभव, साधन या खाने-पीने की चीजों या अपने

में लड़ेंगे। जब विनाश होगा तब जीने के लिए जो जरूरी चीजें चाहिए, वे भी नहीं होंगी। उस समय यातायात, सूचना प्रौद्योगिकी ठप्प हो जायेगी तो दुनिया की क्या परिस्थिति होगी आप अन्दाजा लगा सकते हैं! उस समय परीक्षा किस रूप में आयेगी? भय, असुरक्षा और दुश्चिन्ता।

तब आपको मन एकाग्र करना होगा, स्थिर करना होगा। योगयुक्त हो रहना पड़ेगा, विदेह अवस्था में, आनंद की स्थिति में रहना पड़ेगा। ये सब तब सम्भव होंगे जब आपको इन अवस्थाओं में रहने का अभ्यास बहुत काल का होगा। हमारी अन्त की स्थिति जैसी होगी वैसी ही हमारी गति होगी। हमारा भविष्य हमारे अन्त की मति पर आधारित होगा।



स्वीकारें बदलाव को...

परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है, इसको कोई रोक नहीं सकता। हम कितना ही एक ही पटरी पर खड़े रहना चाहें, एक दिन पटरी खुद अपनी राह मोड़ लेती है। फिर या तो आप बाहर निकल जाते या फिर फंसकर अपनी जान गंवा देते। इसलिए परिवर्तन हेरेक को स्वीकार करना ही होगा। चाहे स्वेच्छा से या मजबूरी से।

जीवन में हर समय हमारी परीक्षा होती है इसलिए हमें तैयार रहना पड़ता है। इसके साथ ही हम सभी जानते हैं कि हमने इस धरती पर जन्म लिया है तो हमारी मृत्यु भी निश्चित है। तो हमें अपनी अन्तिम घड़ियों की परीक्षा के लिए भी तैयारी करनी पड़ती है। चाहे वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ियों की हो, चाहे सृष्टिचक्र की अन्तिम घड़ियों की हो। लेकिन यह बात सब क्यों भूल जाते हैं? क्योंकि हम भ्रमित हो जाते हैं। अगर हमें सदा याद रहे कि हमें

काम करूंगा। अन्तिम घड़ी के लिए इन्तजार करना, यह बड़ा भ्रम है, अपने आपको धोखा देना है क्योंकि हमारा श्वास कब बन्द हो जायेगा क्या पता? इसलिए हमें क्या करना है? बाबा(परमात्मा) ने जो करने के लिए कहा है, हमें वही करना है। उसके लिए कुछ ईश्वरीय नियम हैं, उनका अनुसरण करना है।

बदलें... तो क्या बदलें...!

बाबा कहते, सर्व देहधारियों की याद को भूल एक मुझ निराकार पिता को याद करो। अपनी देह को भी याद नहीं करो। भगवान को सब सौंप दो तो आप सर्व रूप से स्वतन्त्र होंगे। विकारों से स्वतंत्र होंगे, बुराइयों से स्वतंत्र होंगे, व्यर्थ से स्वतंत्र होंगे। मनमानी करना, व्यसनों में लिप्त रहना, पाप करना यह कोई स्वतंत्रता नहीं है। यह स्वतंत्रता के नाम पर पाप करने की स्वच्छन्दता है। बाबा बार-बार कहते हैं, नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनो। क्योंकि और सारे विकार भी आते

विकारों से भी हो सकता है। मोह यहाँ तक खत्म हो कि उसकी राख भी न रहे। यह हमारी अन्तिम परीक्षा होगी। बाबा कहते, किसी की भी ग्लानि न करो। किसी के लिए बुरा नहीं सोचो, बुरा नहीं करो। जहाँ तक हो सके सबको सन्तुष्ट करो ताकि उनसे दुआयें मिल सकें। दुआयें लेना, यह जीवन में बहुत बड़ी उपलब्धि है। प्रतिदिन अपनी उन्नति का चार्ट चेक करो। स्वयं का जज बनो, स्वयं का डॉक्टर बरो, स्वयं का टीचर बनो। देखो, क्या मैं दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रहा हूँ? सदा मन में यह उमंग रहना चाहिए कि मुझे आगे बढ़ना है।

आपको मालूम है...फिर भी...

बाबा ने कहा है कि आप बच्चों में भी कोई होंगे अन्तिम विनाश देखने के लिए। आप भी जानते होंगे कि विनाश का समय कैसा होगा! उस समय साम्प्रदायिक दंगे होंगे, लोग धर्म के नाम पर आपस

...ऐसे में निभाना होगा अपना दायित्व

बाबा ने यह भी कहा है कि विनाश के समय पाँच विकार और पाँच तत्व भी वार करेंगे। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये भी परेशान करेंगे। वे भी बड़े रूप में आयेगे। उसके बाद आसुरी शक्तियाँ खत्म हो जायेगी। लेकिन उससे पहले विकार और विकारी भी आपको परेशान करेंगे, आपका पीछा करेंगे परन्तु अगर आप आत्म-अभिमानि होंगे और परमात्म-अभिमानि होंगे तो उनको आपका प्रकाश रूप दिखाई पड़ेगा, आप देवी रूप में दिखायी देंगी, फरिश्ते रूप में दिखायी देंगी। आप उस समय ऐसी शक्तिशाली अवस्था में होंगे तो वे आप के पास आ नहीं पायेंगे। उस समय आपको अपने योग बल से, योग अवस्था से ही मदद मिलेगी। उस समय प्राकृतिक प्रकोप होंगे। बाढ़ आयेगी, भूकम्प आयेगा। उस समय जल के प्राणी भी बाहर आ जायेंगे। तब लोग घर के बाहर भी रह नहीं पायेंगे। ऐसे समय जो योग में रहेंगे, बाबा के साथ का अनुभव करते रहेंगे उनको जानवर आदि से कुछ भी हानि नहीं होगी। इसलिए बाबा कहते, बच्चे फरिश्ता बनो, अशरीरी बनो, देही अभिमानि बनो। अगर हम अभी से तैयारी करेंगे तो उस अन्तिम परीक्षा का सामना कर पायेंगे और पास हो जायेंगे।

सच्चाई और अच्छाई। क्या है ये सच्चाई और अच्छाई? बस एक छोटा सा शब्द? या कुछ और? या बहुत कुछ? क्या लगता है आपको? आपके हिसाब से सच्चाई और अच्छाई का मायना क्या है? जरा समय निकालकर सोचिएगा।

इन शब्दों पर जरा प्यार से समय देकर गौर करेंगे तो आप पायेंगे कि जब एक व्यक्ति सच्चाई की राह पर चलता है तभी अच्छाई की पराकाष्ठा पर पहुंचता है और जब उस व्यक्ति में अच्छे गुण होते हैं तभी वो सच की राह पर चल भी पाता है। है ना मजे की बात! आप देखिये, कि कैसे ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। सच्चाई के बिना अच्छाई नहीं, और अच्छाई के बिना सच्चाई नहीं।

अक्सर देखा गया है कि लोग जीवन भर स्वयं को अच्छा प्रदर्शित करने के प्रयास

में अपना तन, मन, धन लगाने में संकोच नहीं करते। हर संभव प्रयास करते हैं कि हम स्वयं को सबके सामने अच्छा सिद्ध कर, अच्छाई का सर्टिफिकेट हासिल कर लें। ये किसी एक मनुष्य की बात नहीं, हर मनुष्य की चाहना यही रहती है। चेहरे पर मुस्कान, मुख में मिठास लिए हम एक-दूसरे के सामने जाते हैं, लेकिन पीछे मुड़े और मुस्कान और मिठास का जो मेकअप चेहरे पर चढ़ाया था, वह सब गिर गया। हम सोचते हैं कि सामने तो हम ठीक ही रहे, वो हमें अच्छा ही

समझेगा, मैं उसकी नजर में अच्छा बन गया, अब मैं अच्छा ही कहलाऊंगा! इससे भी मजेदार बात यहाँ यह है कि हम सिर्फ मनुष्यों के साथ ही ऐसा नहीं करते, बल्कि जिसने हमें ये भाव-भंगिमायें, ये भावनायें दी हैं, उनके सामने भी ये अभिनय करने से हम जरा भी नहीं कतराते। भगवान के सामने जाकर, हाथ जोड़कर, नयनों से श्रद्धा और प्रेम की नदियाँ बहाकर भगवान को अपनी अच्छाई दिखाने का जो प्रयास करते हैं वो देखने योग्य होता है। हाथ जोड़े, गलत नहीं है। प्रेम के आँसू बहाओ, गलत नहीं है। लेकिन अभिनय का मेकअप लगाकर नहीं, सच्चाई का रंग चढ़ाकर अपना प्रेम प्रकट करो, अपनी आस्था दिखाओ। हे मानव! दोहरे जीवन या दोहरे मुखौटे से हम एक पल को किसी मनुष्य को भ्रमित कर सकते हैं, उनके साथ धोखा कर सकते हैं, छल कर सकते हैं, लेकिन जिसने ही हमें ये चेहरा दिया, बुद्धि दी, उस बुद्धिवान, उस मायापति को हम अपनी झूठी माया में चाहकर भी फंसा नहीं सकते। परमात्मा सिर्फ हमारे मन की सच्चाई को देखता है। वो एक उस बालक, जिसने परमात्मा को जाना भी नहीं है, उसकी निश्छल मुस्कान, उसकी

सच्ची बोली से प्रसन्न हो सकता है, लेकिन हमारे अभिनय से भरपूर मंत्रजाप कर्मकांड या रिद्धि-सिद्धि-विधि से नहीं। आपके मन में यदि परमात्मा के लिए कोई श्रेष्ठ भावना या प्रेम न हो तो कोई बात नहीं, भगवान आपसे नाराज होने वाला नहीं है। वो तो प्रेम का सागर है, वो क्रोध नहीं देगा आपको, नफरत नहीं देगा आपको, झूठे दिलासे देने या सहयोग देने का अभिनय नहीं करेगा आपके साथ। वो जो देगा, पूरे दिल से देगा, सच्चाई से देगा क्योंकि वो सत्य का आकाश है, जिसका कोई अंत नहीं। कहते हैं... जिसका जैसा चरित्र होता है, उसका वैसा ही मित्र होता है। शुद्धता होती है विचारों में, आदमी कब पवित्र होता है। फूलों में भी कीड़े पाये जाते हैं, पत्थरों में भी हीरे पाये जाते हैं। बुराई को छोड़कर अच्छाई देखिये तो सही, नर में भी नारायण पाये जाते हैं। वो हमारे बिना मांगे हमें सबकुछ देगा, क्योंकि वो हमारा पिता है। लेकिन हर पिता की तरह वो अपने हर बच्चे से यही चाहता है कि हम जैसे भी हों, सच्चे हों।

झूठ का, छल का, अभिनय का मुखौटा पहनकर उनके पास न जायें। वो आपको उसी रूप में स्वीकार करेगा, जैसे आप हैं। और आप देखना, जब आप सच के साथ जीने लग जायेंगे तो आपमें अपने आप ही अच्छाई यानी वो हर गुण जो परमात्मा अपने बच्चों में देखना चाहते हैं वो सारे आ जायेंगे और आप सच में अच्छे बन जायेंगे। फिर आपको किसी के सामने अच्छे होने का अभिनय नहीं करना पड़ेगा। आपको किसी से अच्छाई का सर्टिफिकेट लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि आप सच में अच्छे होंगे और फिर आप स्वयं खुद को और परमात्मा भी आपको ये सर्टिफिकेट देंगे। हमारी अच्छाई और सच्चाई हमें इतना आकर्षक बना देगी कि सारा विश्व स्वतः हमारी ओर आकर्षित होगा। और हमारे इस नश्वर देह के अंत के पश्चात् भी हम सभी के दिलों में जीवित रहेंगे, प्रेरणा और आदर्श बनकर। फिर इस संसार में किसी मनुष्य की ये ताकत नहीं होगी कि वो आपको अच्छा न कहे! और यदि वो आपको अच्छा नहीं कहता, माना कि वो सच के साथ नहीं, झूठ के साथ जी रहा है। तो सच्चे बनें, अच्छे बनें। और अच्छे बनकर संसार में सत्य को विजयी करें।

रीयल को रियलाइज़ कर रोल में आयें...

ब्र.कु. मोनिका, शांतिवन

बात वो करो जो सबको अच्छी लगे,
काम वो करो जो स्व को अच्छा लगे।
दोस्त वो बनाओ जो गम में अपना लगे,
पहचान वो बनाओ जो, जाने के बाद भी लोगों को सच्ची लगे।।





दीपावली के शुभ अवसर पर...

सेवाओं के लिए तैयार भवन 'सत्कार'



गुलबर्गा-कर्नाटक। अमृत सरोवर परिसर में एक बारह अपार्टमेंट से युक्त नवनिर्मित आधुनिक सुविधाजनक आवासीय 'सत्कार भवन' का दीपावली के शुभ अवसर पर उद्घाटन आन्ध्र, तेलंगाना एवं महाराष्ट्र की क्षेत्रीय निदेशिका व ब्रह्माकुमारीज कमेटी की मेम्बर राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी के शुभ हस्तों द्वारा

आध्यात्मिक उन्नति में... अमृत सरोवर

क्षेत्रीय स्तर के विभिन्न सामुदायिक आध्यात्मिक कार्यक्रम निरंतर आयोजित किये जाते हैं, जैसे कि तनाव मुक्ति कार्यक्रम, सेल्फ अवेयरनेस, स्लीप मैनेजमेंट, सेल्फ मैनेजमेंट, लाइफ मैनेजमेंट, टाइम मैनेजमेंट, राजयोग मेडिटेशन, योगा कैम्प, युवा जागृति, व्यसन मुक्ति कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण, बाल विकास कार्यक्रम आदि। **नवनिर्मित आधुनिक सत्कार भवन...** दो सौ भाई-बहनों के रहने की उचित व उत्तम व्यवस्था से सुसज्जित।

हुआ। इस मौके पर दीदी ने बधाई देते हुए कहा कि ये भवन निश्चित ही सभी का सत्कार करते हुए ईश्वरीय शक्तियों का साक्षात्कार करायेंगा तथा हर आत्मा को संतुष्ट व तृप्त करेगा। उन्होंने दीपावली की भी सभी को बधाई दी और कहा कि स्थूल दीयों के साथ आत्मदीप को भी सदा प्रज्वलित रखें।



रुद्रपुर-उत्तराखण्ड। माननीय मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत को ईश्वरीय सौगात भेंट कर ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सूरजमुखी बहन।

घर के साथ मन की भी हो सफाई...



रायपुर-छ.ग। दीपावली पर हम सब जिस प्रकार घर की सफाई का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार अन्तर्मन की सफाई भी जरूरी है। बाहर के अंधकार को तो मिट्टी के दीये जलाकर दूर किया जा सकता है, किन्तु अन्तर्मन में छापे हुए अंधकार को दूर करने के लिए हमें शुभ संकल्पों के दीप जलाने होंगे। यह विचार ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी ने दीपावली पर चौबे कॉलोनी में आयोजित आध्यात्मिक समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने आह्वान

करते हुए कहा कि आओ, हम सभी मनुष्य सत्य परमात्मा से सत्य ज्ञान लेकर अपने जीवन को पावन बनाएं। अपनी आत्म ज्योति जगाकर ईश्वरीय मिलन का वास्तविक सुख प्राप्त करें। ऐसे मनोपरिवर्तन से ही पृथ्वी पर स्वर्ग आएगा। जहाँ श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य होगा। उन्होंने आगे कहा कि आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। लोगों का अन्तर्मन काम, क्रोध आदि विकारों के

अधीन हो गया है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन भला कैसे हो सकता है! यह कैसी विडम्बना है कि मन-मन्दिर की सफाई करने की जगह बाहरी सफाई से ही हम खुश हो जाते हैं। इस समय परमपिता परमात्मा जो कि जन्म-मरण के चक्र में न आने के कारण सदा ही जागती ज्योति हैं, हम मनुष्य आत्माओं की ज्ञान और योग से ज्योति जगाकर पावन बना रहे हैं। दीपावली का त्योहार परमात्मा के इन्हीं कर्मों की यादगार है। उन्होंने आगे कहा कि हमेशा दूसरों के लिए अच्छा सोचें। सदैव शुभ सोचेंगे तो लाभ होना ही है। इसीलिए हमारी भारतीय संस्कृति में जब कोई नया कार्य शुरू करते हैं तो स्वास्तिक के साथ शुभ-लाभ लिखते हैं। क्योंकि शुभ के साथ लाभ जुड़ा हुआ है। इस अवसर पर सेवाकेन्द्र की रंग-बिरंगी लाइटों एवं रंगोली से अद्भुत सजावट की गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

श्रेष्ठ संकल्पों के साथ मनायें दीपावली



कादमा-हरियाणा। स्वर्णिम भारत का निर्माण करने के लिए शांति का धर्म, प्यार की भाषा, सम्मान की सभ्यता, एकता की संस्कृति के साथ हमें दीपावली का पर्व मनाना चाहिए। ये आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन ने व्यक्त किए। उन्होंने सभी को दीपोत्सव की बधाई देते हुए कहा कि अपने पुराने हिसाब-किताब व कार्मिक अकाउंट को आत्म-स्मृति का दीप जला परमात्मा से शक्ति ले खत्म कर श्रेष्ठ कर्मों के जमा

का खाता खोलने का दृढ़ संकल्प ले मनाएं दीपावली, तभी हर घर दिव्य गुणों की खुशबू से महकेगा व दिव्य शक्ति से रोशन होगा। इस अवसर पर ब्र.कु. ज्योति बहन ने कहा कि दीया जलाना अर्थात् देने की भावना, तो हमें प्यार, खुशी, सम्मान सबको देते जाना है जिससे हमारा समाज एकता के सूत्र में बंध स्वर्णिम बनेगा। इस अवसर पर ब्र.कु. रेखा व ब्र.कु. सुशीला ने रंगोली सजाई। माँ लक्ष्मी की झांकी आकर्षण का केंद्र रही तथा राधे कृष्ण के नृत्य का सभी ने भरपूर आनंद उठाया।

दीपावली मिलन के साथ हो संस्कार मिलन



भोपाल-रोहित नगर(म.प्र.)। इस दिवाली पर घर की साफ-सफाई के साथ मन के विकारों को भी साफ करें एवं मन को अज्ञान अंधकार से मुक्त कर आध्यात्मिक अलौकिक प्रकाश से रोशन करें। सभी इस समाज में प्रेम, शांति, सद्भावना, खुशी के दीपक सदा ही जगमगा कर रहें। दीपावली मिलन के साथ संस्कार मिलन की रास करें। यह बात रोहित नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना ने कही।

साथ ही उन्होंने शुभ संकल्पों के दीपक जलाते हुए सभी को संकल्प दिलाया। उन्होंने सभी से अपील की कि वर्तमान समय कोरोना काल में अपने आप को सुरक्षित रखें। सेवाकेन्द्र पर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ दीपोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर महालक्ष्मी का बड़े ही श्रद्धा भाव से आरती व पूजन किया गया तथा हर प्राणी स्वस्थ व सुरक्षित रहे ऐसी शुभ कामनायें की गईं।

'आध्यात्मिक दरिद्रता' समस्याओं का मूल कारण

गया-सिविल लाइन (बिहार)।

अलौकिक प्रकाश से सम्पन्न आत्माएं कभी किसी के मन को पीड़ा नहीं दे सकती हैं। जगत की सभी समस्याओं का मूल कारण आध्यात्मिक दरिद्रता है। दीपावली का प्रकाश पर्व अन्तर की दरिद्रता समाप्त करके ज्ञान, गुण और शक्तियों की सम्पन्नता लाने का संदेश देता है। ये उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित दीपोत्सव समारोह में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीला बहन ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि दीप जलाकर हम ज्ञान-रत्न धन की कामना करते हैं ताकि अज्ञान का तमस् जिनंदगी से चला जाये। जीवन में ज्ञान-जागृति न होने से ही मनुष्य अंधेरे में नजर चुराकर विकर्म करता है। मिथ्या ज्ञान के कारण समाज में ये गलतियां हो रही हैं। ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश ही स्वच्छता और



पारदर्शिता लायेगा। ईश्वरीय ज्ञान से जागृत आत्माओं के सम्पूर्ण प्रकाश में अत्याचार, शोषण व भ्रष्टाचार जैसी काली प्रवृत्तियां समाप्त हो जायेंगी व विश्व के कोने-कोने में शांति, प्रेम व भाईचारे की भावना जागृत होगी। आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व अति

सुखकारी समय था व हर दिन खुशियों के दीपक जलते थे। पूर्व की भांति अब पुनः भारत शिरोमणि और जगद्गुरु का स्थान प्राप्त करेगा और इसी भारत देश से ईश्वरीय अध्यात्म की दैदीप्यमान किरणें सम्पूर्ण भू-मण्डल को प्रकाशित करेंगी।

